फ्रैंकफर्ट स्कूल

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।

दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

DR. SHAKEEL HUSAIN

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

फ्रैंकफर्ट स्कूल : परिचय

जर्मनी के फ्रैंकफर्ट नामक स्थान पर विश्वविद्यालय में दूसरे विश्वयुद्ध के पूर्व और जर्मनी में हिटलरी नाजीवाद के अभ्युदय के पूर्व जर्मनी के विद्वानों का एक समूह यूरोप की तकालीन चिन्तनधारा से थोड़ा अलग हटकर

सोचने लगा था। ये विद्वान विभिन्न विषयों से सम्बद्ध थे। उनपर मार्क्सवादी विचारों की गहरी छाप तो थी परन्तु वे मार्क्सवादी नहीं कहे जा सकते। ऐसे विद्वानों में यहूदियों की संख्या काफी थी। वे जर्मनी की आदर्शवादी विचार परम्पराओं से भी बहुत अलग होकर सोचने वाले व्यक्ति थे। उनका झुकाव प्रजातांत्रिक मूल्यों और प्रक्रियाओं के साथ-साथ जर्मनी की तकालीन आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों से जुड़ी समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने की ओर भी था। **1930 में बुद्धिजीवियों द्वारा एक वैचारिक संस्थान की स्थापना फ्रैंक फर्ट विश्वविद्यालय में हुयी जिसका उद्देश्य भावी राजनीतिक-सामाजिक संरचना हेतु समय सापेक्ष व्यवहार्य विचारों और कार्यक्रमों की प्रस्तावना करना था।** तेजी से बदलती हुयी उस युग की परिस्थितियों में फ्रैंकफर्ट स्कूल के अनुयाइयों के विचारों में स्पष्ट रूप से प्रवाह की दो क्रमिक धाराओं का अनुभव होता है जिनमें :-

1- एक श्रेणी के विचार उस काल से सम्बन्ध रखते हैं जबकि जर्मनी आदि देशों में अभी अधिनायकवाद अपनी विकास की अवस्था से गुजर रहा था ।

2- दूसरी धारा जर्मनी में अधिनायकवाद उत्कर्ष के चरम शिखर पर पहुंने और विश्वयुद्ध की शुरूआत होने के बाद के बौद्धिक विमर्श और साहित्य से सम्बन्धित है ।

प्रमुख विचारक

चूंकि इस संस्थान के अनुयायी विभिन्न विषयो से थे, अतः उनके विचारों में पर्याप्त विविधता है और कहीं कहीं विरोधाभास का भी दर्शन होता है। ऐसे विद्वानों और इस स्कूल से सम्बद्ध विभिन्न सिद्धांतकारों की संख्या यद्यपि काफी अधिक है फिर भी **मैक्स हारखाइमर, थियोडोर एडानों, वाल्टर बेंजामिन, हर्बर्ट मारक्यूजे, फ्रेडरिक पोलाक, एरिक फ्राम, फ्रान्ट्ज न्यूमैन, क्लाज आफे, एक्सेल होनेथ , जुरगेन हैबरमास** जैसे व्यक्तियों के नामों का उल्लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

विशेषताएं

1- इन विद्वानो का दृष्टिकोण प्रगतिशील तो था, परन्तु वे साम्यवादी या समाजवादी वामपंथी विचारधाराओं के प्रति किसी प्रकार की विशिष्ट प्रतिबद्धता नहीं रखते थे।

2- यद्यपि वे अपने समय से पूर्व यूरोप में प्रचलित हो रही अबुद्धिवादी वैचारिक संस्थापनाओं के विपरीत दिखायी देते हैं फिर भी उन्हें परम्परागत अर्थों में बुद्धिवादी भी नहीं कहा जा सकता।

3- उनके द्वारा तार्किकता और विवेक तथा विचारशीलता के प्रति विशेष रुझान दर्शाया गया है परन्तु वे पूर्णतः विज्ञान वादी या आगस्ट काम्प्ट की तरह के प्रत्यक्षवादी भी नही थे ।

4- उनके विचारों पर जर्मन विचार परम्पराओं का भी स्पष्ट परन्तु आंशिक प्रभाव देता है ।

5- उनके विचारों पर अपने काल से पूर्व की विभिन्न विचारधाराओं, विभिन्न सिद्धांतों आदि का प्रभाव व्यापक रूप से मौजूद देखा जा सकता है ।

6- कहीं सकारात्मक रूप में तो कहीं नकारात्मक या गत्यात्मक रूप में उनके विचारों पर प्रथम विश्वयुद्ध के कारणों, परिस्थितियों एवं परिणामों का प्रभाव पड़ते हुए भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

7- उनके चिन्तन के पीछे विश्वयुद्ध की पुनरावृत्ति का भय भी कार्य करता दिखायी देता है।

8- लोकतंत्र के प्रति निष्ठा फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वानों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है क्योंकि लोकतंत्र को ही वे समाज के सभी वर्गों के लिए उनके उत्थान के लिए आवश्यक मानते थे।

8- फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वानों का मुख्य लक्ष्य सामाजिक परिवर्तन था ।

9- किंतु सामाजिक परिवर्तन के लिए सामाजिक परिवर्तन का आधार वे लोकतंत्र को बनाते हैं साम्यवादी क्रांति को नही ।

9-साम्यवाद के वर्ग संघर्ष के प्रति सहानुभूति प्रदर्शन करने के बाद भी उनकी समाज साम्यवाद के क्रांति के सिद्धांत के प्रति और हिंसात्मक परिवर्तन के प्रति कोई निष्ठा नहीं थी ।
बल्कि वह उसकी आलोचना भी करते थे ।

10- फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वानों में जो सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है जो लगभग सभी विद्वानों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है वह है सर्व सत्तावादी और सर्वाधिकार वादी शासन का विरोध ।

11- मनुष्य की स्वतंत्रता और समाजवाद में कोई अधिक विरोध नहीं पाते समाज की आर्थिक गतिविधियां मनुष्य की स्वतंत्रता की विरोधी नहीं है लेकिन मनुष्य की राजनीतिक स्वतंत्रता को त्याग कर सकता के किसी भी आदर्श को प्राप्त नहीं किया जा सकता ऐसा ऐसी उनकी मान्यता थी ।

द्वन्द्ववादी दृष्टि : मार्क्सवाद और फ्रैंक फर्ट स्कूल

मार्क्सवादियों की तरह उन्होंने अपनी समसामयिक समस्याओं को मात्र आर्थिकता की दृष्टि से नहीं बल्कि मुख्य रूप से सामाजिकता की दृष्टि से देखने-परखने की कोशिश की। वे अपनी प्रतिबद्धताओं के क्षेत्र में प्रजातांत्रिक जीवन मूल्यों के प्रति पूर्ण समर्पित और हर प्रकार की निरंकुशतावादी और अधिनायकवादी प्रवृत्तियों के पूर्ण विरोधी दिखायी देते हैं। इसी कारण नाजीवाद के अभ्युदय क्रम के साथ जर्मनी में उनकी वैचारिक गतिविधियाँ क्रमशः काफी नियंत्रित और शिथिल होती चली गयीं, हिटलर द्वारा उनका दमन शुरू हुआ. और उन्हें अन्ततः जर्मनी से निर्वासित होना पड़ा। बावजूद इस निष्कासन के उन्होंने अपने संस्थान की वैचारिक गतिविधियों को बंद नहीं किया और अमेरिका के शिकागो नगर में इस संस्थान को पुर्नजीवन देते हुए अपने विचारों के प्रणयन का क्रम लम्बे समय तक जारी रखा। परन्तु कालान्तर में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की आमूलतः बदली हुयी परिस्थितियों में तो उनके विचारों की प्रासंगिकता ही पूर्णरूप से बनी रह सकी और न ही पूर्व की गतिशीलता। इसके फलस्वरूप उनका प्रभाव एवं चिन्तन क्षेत्र क्रमशः संकुचित होता हुआ लुप्त हो गया।

DR. SHAKEEL HUSAIN

तेजी से बदलती हुयी उस युग की परिस्थितियों में फ्रैंकफर्ट स्कूल के अनुयाइयों के विचारों में स्पष्ट रूप से प्रवाह की दो क्रमिक धाराओं का अनुभव होता है जिनमें

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

एक श्रेणी के विचार उस काल से सम्बन्ध रखते हैं जबकि जर्मनी आदि देशों में अभी अधिनायकवाद अपनी विकास की अवस्था से गुजर रहा था

और दूसरी तब जबकि जर्मनी में अधिनायकवाद उत्कर्ष के चरम शिखर पर पहुंच गया था और विश्वयुद्ध की शुरूआत हो गयी थी। इसीके साथ चूंकि इस संस्थान के अनुयायी विभिन्न सोपानों पर संस्थान से सम्बद्ध हुए थे, अतः उनके विचारों में पर्याप्त विविधताओं और बहुमुखत्व का ही नहीं अपितु कहीं कहीं विरोधाभास का भी दर्शन होता है। ऐसे विद्वानों और इस स्कूल से सम्बद्ध विभिन्न सिद्धांतकारों की संख्या यद्यपि काफी अधिक है फिर भी **मार्क्स हार्खाइमर, थियोडोर एडानों, वाल्टर बेंजामिन, हर्बर्ट मारक्यूज तथा हैवरमास** जैसे व्यक्तियों के नामों का उल्लेख विशेष महत्व के साथ किया जा सकता है।

मार्क्सवादी प्रभाव

नव-वामपन्थियों की भाँति मार्क्सवाद के विभिन्न सिद्धांतों के प्रति आकर्षित होते हुए भी फ्रैंक फर्ट्र स्कूल से सम्बद्ध विद्वानों ने अपने विश्लेषण के क्रम में यह पाया कि मार्क्स के विचारों में अव्यावहारिकता और अयथार्थवादिता की मात्रा बहुत अधिक है। मार्क्स के अनेक सिद्धांत उनके अनुसार एक प्रकार की सैद्धांतिक दुराग्रहता से पीड़ित दिखाई देते हैं विशेषतः मार्क्स के जीवन के उत्तरार्ध में व्यक्त विचारों में यह प्रवृत्ति अधिक प्रछन दिखाई देती है। अतः प्रौढ़ मार्क्स के विचारों की तुलना में युवा मार्क्स के विचारों ने उन्हें कहीं अधिक आकर्षित किया जिसमें उनके अनुसार ज्यादा संवेदनशीलता, ज्यादा मानवीयता, ज्यादा प्रजातांत्रिकता, कम सैद्धांतिकता आदि के गुण पाए जाते हैं।

उन्होंने अपने विचारों के क्रम में मानव प्रगति की प्रक्रिया को विश्लेषित करने के दौरान द्वन्द्ववाद के अस्तित्व को तो स्वीकार किया परन्तु मात्र उसके भौतिकवादी अर्थवादी रूप में नहीं जिस रूप में मार्क्स ने प्रस्तावित किया था अर्थात उन्होंने ऐतिहासिक भौतिकवाद की दृष्टि से सामाजिक विकास क्रम के वैज्ञानिक विश्लेषण और व्याख्या को भी सम्पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया। द्वन्द्ववादी प्रक्रिया के स्वरूप निर्धारण सम्बन्धी अपने प्रयत्नों के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने हीगल के विचारों को अधिक निकट रूप से मानव अभिचेतना विचारों के महत्व को स्वीकृति दी। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो यही कहना होगा कि उनके द्वारा मार्क्स के विपरीत मानव समाज के विकास के प्रसंग में गैर-भौतिकवादी विचार तत्वों की महत्ता भी प्रतिपादित की गयी। वे वर्गों के अस्तित्व, उनके हित विरोध से तो इन्कार नहीं करते, फिर भी उनकी दृष्टि को पूरी तरह आर्थिक वर्गवादी भी नहीं कहा जा सकता।

अध्ययन दृष्टि

उनकी मान्यता थी कि समाज से सम्बद्ध किसी भी विषय का अध्ययन तभी सत्यपरक हो सकता है जबकि वह मूल्य-निरपेक्ष हो। ऐसे अध्ययनों में पूर्वाग्रहों, पूर्व निर्धारित सिद्धांतों, विचारधारात्मक प्रतिबद्धताओं आदि को कोई स्थान नहीं दिया जाना चाहिए। उन्होंने मानव समाज से सम्बद्ध अध्ययन और विश्लेषण के सभी सन्दर्भों में नकारात्मकता के दृष्टिकोण के स्थान पर सकारात्मकतावादी दृष्टि को अपनाए जाने की अपेक्षा पर बल दिया। अध्ययन की सार्थकता उनके अनुसार मात्र यह बता देने में नहीं कि क्या है अपितु साथ में यह भी बताने से है कि क्या होना चाहिए?

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

विभिन्न राष्ट्रों विशेषतः कमजोर और अविकसित राज्यों का दूसरे अविकसित राज्यों द्वारा तरह-तरह से शोषण होता है जिसे रोका जाना चाहिए। किसी भी देश को किसी दूसरे देश पर शासन करने का कोई अधिकार नहीं। सभी

राष्ट्रों को आत्मनिर्णय का अधिकार बिना शर्त मिलना ही चाहिए। शोषण एवं उपनिवेशवाद के स्थान पर उन्होंने राष्ट्रों के पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। हथियारों की होड़ पर विभिन्न देशों द्वारा खर्च की जाने वाली विशाल धनराशि को उनके अनुसार सामाजिक हित से सम्बद्ध कार्यों के लिए खर्च किया जाना चाहिए।

मनुष्य और समाज

उन्होंने समान्य तौर पर यह माना कि आज का मनुष्य सामाजिक एवं विशेष रूप से राजनीतिक व्यवस्था के गैर व्यक्तिपरक, अतिसमूहवादी और नियंत्रणवादी तथा सर्वसत्तावादी का विशिष्ट रूप ग्रहण कर लेने के कारण उस व्यवस्था से सभी (राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक) क्षेत्रों में क्रमशः अलगाव का शिकार होता जा रहा है। एक प्रकार की परकीकरण की प्रवृत्ति मनुष्य में दिनों दिन गहरायी तक घर करती जा रही है। इसके चलते "मनुष्य के स्वभाव और व्यवहार में ऐसी बहुत सारी घातक प्रवृत्तियाँ जैसे निराशा, हताशा, कुण्ठा आदि भी प्रविष्ट होती जा रही है, जिन्हें मानव-भविष्य की दृष्टि से किसी भी प्रकार शुभकर नहीं माना जा सकता।

यही प्रवृत्तियाँ मुख्यतः प्रजातंत्रीय व्यवस्था के मूल्यों केफ्रैंकफर्ट स्कूल

विनाश और अधिनायकवादी प्रवृत्तियों के उठाने का प्रमुख कारण हैं। इन विकासशील कुप्रवृत्तियों को दूर बिना समुदाय के स्वरूप के विकास कोई सम्भावना बनती। इस विचार संस्थान से सम्बद्ध विचारक किसी प्रकार के उग्र एवं आक्रामक राष्ट्रवाद कट्टर विरोध करने के साथ निरस्त्रीकरण एवं विश्व शान्ति की आवश्यकता पर अत्यधिक बल देते देखे सकते हैं। इस में वे सम्पूर्ण मानव समाज देखने की कोशिश परिस्थितियों अनुसार विश्व के किसी भी में व्याप्त अशान्ति, हिंसा युद्ध किसी किसी रूप में मानवता प्रभावित करने कारक होते हैं। मनुष्य शान्तिपूर्ण परिस्थितियों में ही अपना समुचित विकास सकता सामाजिक अपने अधिकारों की रक्षा कर

आर्थिक दृष्टिकोण

आर्थिक नीतियों के क्षेत्र में वे प्रायः सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण की नीति के विरोधी दिखायी देते हैं। सम्पत्ति के राष्ट्रीयकरण की नीति को वे उसी सीमा तक उचित मानते हैं जहां तक कि वह सामाजिक हितों की पूर्ति के लिए अपरिहार्य हों। उनकी आर्थिक दृष्टि एक प्रकार की मिश्रित अर्थव्यवस्था की पक्षधर दिखायी देती है। इसमें व्यक्तियों, सहकारी संस्थाओं आदि सभी, अपनी-अपनी विशिष्ट भूमिकाएं हैं। वे विभिन्न प्रजातांत्रिक देशों के मध्य घनिष्ठ आर्थिक सहकार की स्थापना के भी पक्षधर दिखायी देते हैं। समुन्नत और औद्योगिक रूप से अग्रणी राष्ट्रों द्वारा गुलाम और पिछड़े राष्ट्रों के आर्थिक शोषण के प्रति भी उन्होंने अपनी असहमति दर्ज की।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में उन्होंने महसूस किया कि सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण चाहे वह किसी व्यवस्था में हो, देश और समाज की आर्थिक विषमताओं और उससे उत्पन्न होने वाली किन्हीं भी समस्याओं के निराकरण का मार्ग नहीं हो सकता। वर्गभेदों और उनसे जुड़ी समस्याओं को एकबारगी किसी क्रान्ति के माध्यम से आमूलतः खत्म कर देना व्यावहारिक रूप से कदापि सम्भव नहीं है। उन्हें क्रमिक रूप से ही खत्म किया जा सकता है और इसका आदर्शतम व्यवस्थात्मक विकल्प हो सकता है प्रजातंत्र।

प्रजातंत्र उनकी दृष्टि में शासन की केवल एक विधा मात्र नहीं है वरन वह समाज के विकास क्रम की श्रेष्ठतम उपलब्धि भी है। वह मानव द्वारा प्रयुक्त अबतक की समस्त शासन व्यवस्थाओं में श्रेष्ठतम भी है। उसमें स्वयं समाज के संगठन एवं कार्यपद्धति के समस्त गुण अभिव्यक्त देखे जा सकते हैं। अपने आपमें एक विशिष्ट जीवन दर्शन भी है और जीवन दृष्टि भी। मानव समाज से सम्बद्ध प्रजातंत्र विभिन्न समस्याओं के प्रभावी ढंग से निस्तारण हेतु जिस पारस्परिक सहकार और सूझबूझ की आवश्यकता हो सकती है या है, प्रजातंत्र में ही वे सुलभ हो सकती है।

प्रजातंत्र के प्रति उनकी इस प्रकार की प्रतिबद्धताओं ने उनके विचारों को व्यापक रूप से विकेन्द्रीकरण विशेषतः राजनीतिक एवं आर्थिक विकेन्द्रीकरण के पक्ष में उन्मुख किया है, इसका आभास सहज ही हो जाता है। फ्रैंक फर्ट विचार संस्थान से सम्बद्ध विचारकों को तीसरी दुनियां के देशों के भावी महत्व का भी आभास होने लगा था और वे उनके साथ मानवीय आधारों पर समतामूलक व्यवहार किए जाने के पक्षधर रहे हैं। उनके द्वारा इन देशों के आत्मनिर्णय सम्बन्धी अधिकारों की भी पुष्टि की गयी है।
अधिनायकवाद किसी भी प्रकार का हो, भले ही वह रूसी सर्वहारा अधिनायकवाद ही क्यों न हो, उनके तमाम मार्क्सवादी आकर्षण के बावजूद उन्हें ग्राह्य नहीं।

निष्कर्ष

इस प्रकार फ्रैंकफर्ट स्कूल सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक चिंतकों का वह समूह है जो बीसवीं शताब्दी के प्रथम तीन दशकों तक के महान चिन्तको दार्शनिको के चिन्तन के प्रकाश मे नवीन चिन्तन दृष्टि का विकास और प्रसार करना जिसे सामान्यतः क्रिटिकल थिअरी कहा जाता है । क्रिटिकल थिअरी को सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में एक उपाय के रूप में प्रस्तुत करने का श्री फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वानों को जाता है ।

गृह कार्य

DR. SHAKEEL HUSAIN

1- फ्रैंकफर्ट स्कूल के प्रमुख विचारको का परिचय दीजिए । 100 शब्द ।

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

2- प्रजतंत्र और अर्थव्यवस्था पर फ्रैंकफर्ट स्कूल के विचारो की समीक्षा कीजिए ।

3- फ्रैंकफर्ट स्कूल के राजनीतिक विचारो की समीक्षा कीजिए ।

संदर्भ

Singh s.p.n (1989) : *modern political theory .* Varanasi.

आनलाइन रिसोर्स

https://www.frankfurt-school.de/en/home

https://iep.utm.edu/frankfur/

Feed Back link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE